आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353
डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023

प्रेषण :- कार्यालय चेतक सर्कल पोस्ट ऑफिस ,उदयपुर
प्रेषण दिनांक:-प्रतिदिन

दैनिक समाचार–पत्र

मन के जीते जीत सदा

• वर्ष - 8 • अंक-2284 • उदयपुर, शुक्रवार 26 मार्च, 2021 • प्रेषण दिनांक : प्रतिदिन • कुल पृष्ठ : 4 • मूल्य : 1 रुपया

समाचार–जगत्

सकारात्मक व जनहितार्थ खबरें

जैव विविधता पर मंडरा रहा खतरा, लुप्त होने के कगार पर कई प्रजातियां

अगर देश में प्रमुख रूप से लुप्त होती कुछेक जीव–जंतुओं की प्रजातियों की बात करें तो कश्मीर में पाए जाने वाले हांगलू की संख्या सिर्फ दो सौ के आसपास रह गई है, जिनमें से करीब 110 दाचीगाम नेशनल पार्क में हैं। इसी प्रकार आमतौर पर दलदली क्षेत्रों में पाई जाने वाली बारहसिंगा हिरण की प्रजाति अब मध्य भारत के कुछ वनों तक ही सीमित रह गई है। वर्ष 1987 के बाद से मालाबार गंधबिलाव नहीं देखा गया है। हालांकि माना जाता है कि इनकी संख्या पश्चिमी घाट में फिलहाल दो सौ के करीब बची है। दक्षिण अंडमान के माउंट हैरियट में पाया जाने वाला दुनिया का सबसे छोटा स्तनपायी सफेद दांत वाला छछूंदर लुप्त होने के कगार पर है। एशियाई शेर भी गुजरात के गिर वनों तक ही सीमित हैं।

देश में हर साल बड़ी संख्या में बाघ मर रहे हैं, हाथी कई बार ट्रेनों से टकराकर मौत के मुंह में समा रहे हैं। इनमें से कइयों को वन्य तस्कर मार डालते हैं। इंटरनेशनल यूनियन फॉर कंजर्वेशन ऑफ नेचर (आइयूसीएन) के मुताबिक भारत में पौधों की करीब 45 हजार प्रजातियां पाई जाती हैं। इनमें से भी 1336 प्रजातियों पर लुप्त होने का खतरा मंडरा रहा है। इसी प्रकार फूलों की पाई जाने वाली 15 हजार प्रजातियों में से डेढ़ हजार प्रजातियां लुप्त होने के कगार पर हैं।

पर्यावरण विज्ञानियों के मुताबिक प्रदूषण तथा स्मॉग भरे वातावरण में कीड़े–मकोड़े सुस्त पड़ जाते हैं। प्रदूषण का जहर अब मधुमक्खियों तथा सिल्क वर्म जैसे जीवों के शरीर में भी पहुंच रहा है। रंग–बिरंगी तितलियों को भी इससे काफी नुकसान हो रहा है। यही नहीं, अत्यधिक प्रदूषित स्थानों पर तो पेड़–पौधों पर भी इसका बुरा प्रभाव पड़ रहा है। हवा में सल्फर डाईऑक्साइड, नाइट्रोजन तथा ओजोन की अधिक मात्र के चलते पेड़–पौधों की पत्तियां भी जल्दी टूट जाती हैं। पर्यावरण विशेषज्ञों का स्पष्ट कहना है कि अगर इस ओर जल्द ध्यान नहीं दिया गया तो आने वाले समय में स्थितियां इतनी खतरनाक हो जाएंगी कि धरती से पेड़–पौधों तथा जीव–जंतुओं की कई प्रजातियां विलुप्त हो जाएंगी। माना कि धरती पर मानव की बढ़ती जरूरतों और सुविधाओं की पूद्दत के लिए विकास आवश्यक है, पर यह हमें ही तय करना होगा कि विकास के इस दौर में पर्यावरण तथा जीव–जंतुओं के लिए खतरा उत्पन्न न हो।

ग्रीनफील्ड कॉरिडोर पर दौड़ेगा विकास

कोटा से जयपुर, इलाहाबाद, उदयपुर और गुजरात के लिए बेहतर रोड़ कनेक्टविटी है, लेकिन कोटा से दिल्ली और मुंबई के लिए बहुत अच्छी रोड कनेक्टीविटी निकट भविष्य में स्थापित होगी। इससे हाड़ौती के विकास को चार चांद लगेंगे। केन्द्र सरकार की भारतमाला परियोजना के तहत बन रहे आठ लेन के ग्रीन फील्ड एक्सप्रेस वे के तहत कोटा जिले में भी 106 किलोमीटर की सड़क बनेगी। यह हाइवे बनने से कोटा से दिल्ली और मुंबई जाना आसान होगा। योजना सामाजिक और आर्थिक बदलाव की नई कहानी लिखेगी। दिल्ली और मुंबई के बीच भारतमाला परियोजना के तहत ग्रीनफील्ड राजमार्ग तय किया जा रहा है। मुकुंदरा हिल्स बाघ अभ्यारण्य के जरिए भूमिगत रास्ते के रूप में विकसित किया जाएगा।

एक हाइवे.... सात राज्यों से कोटा को जोड़ेगा– ईस्ट वेस्ट कॉरिडोर परियोजना के तहत ही कोटा सात राज्यों से जुड़ चुका है। इनमें राजस्थान, मध्यप्रदेश, उत्तरप्रदेश, गुजरात, बिहार, झारखंड, पश्चिम बंगाल और असम शामिल है। इस्ट वेस्ट कॉरिडोर परियोजना के तहत ही कोटा में चम्बल नदी पर केबल स्टे ब्रिज बनाया गया है। ईस्ट वेस्ट कॉरिडोर इसकी लंबाई करीब 1.4 किमी है, इससे 700 मीटर का पुल केबल स्टे है, इसे झूलता हुआ पुल कहते है। पुल के तार 120 मीटर ऊँचे पिलर से सहारे बंधे है। पुल की लोडिंग क्षमता हर पाइंट पर 155.4 टन है। इस पर वाहनों को बीच में रोकने की मनाही है। इसके निर्माण में कई देशों की तकनीक का उपयोग किया गया है। डिजायन का कार्य फ्रांस की सिस्ट्रा, पर्यवेक्षण यूएस की एलबीजी कंपनी को दिया गया। जांच का कार्य डेनमार्क की कंपनी कोवी इंजीनियरिंग को दिया गया था, बियरिंग इटली से तो केबल जापान से आई थी। केबल का काम फ्रांस की कंपनी ने किया। स्पेशल स्टील यूक्रेन जापान से आया। निर्माण साउथ कोरिया की हुंडई और भारत की गैमन इंडिया कंपनी ने किया।

सेवा–जगत्

सेवा पथ पर आपका नारायण सेवा संस्थान

संस्थान द्वारा गाजियाबाद में 25 परिवारों को दिया निःशुल्क राशन

नर को नारायण का स्वरूप मानते हुए गरीब दिव्यांग मूक बधिर एवं कोरोना महामारी के चलते बेरोजगार हुए गरीब कामगारों को नारायण सेवा संस्था उदयपुर की ओर से 25 निर्धन परिवारों को निः शुल्क राशन किट वितरण की गई। संस्थान आश्रम प्रभारी सुरेश जी गोयल ने बताया कि नारायण सेवा संस्थान 184 सेठ गोपीमल धर्मशाला दिल्ली गेट, गाजियाबाद में राशन वितरण शिविर प्रातः 10:30 बजे आयोजित किया गया। इस शिविर स्थानीय शहर गाजियाबाद से सीताराम जी सिंघल, अरुण जी गर्ग, रामनरेश जी दयाल, जगदीश जी कंसल, अनिल जी अग्रवाल, सांवरिया साडी सांवरिया शोरूम के चेयरमेन एवं सुभाष जी मंगल, दिनेश्वर जी दयाल सहित कई गणमान्य मेहमान उपस्थित थे। संस्थान पिछले 9 माह से उदयपुर मुख्यालय सहित देश की सभी शाखाओं के माध्यम से निःशुल्क राशन वितरण की सेवा दे रही है। संस्थान संस्थापक कैलाश जी 'मानव' ने बताया कि संस्थान ने ऐसे जरूरतमंद के लिए नारायण गरीब परिवार राशन योजना के माध्यम से 50000 परिवारों तक राशन पहुंचाने का लक्ष्य निर्धारित किया है। इसी क्रम में गाजियाबाद में राशन वितरण शिविर का आयोजित किया। प्रत्येक किट में 20 किलो आटा, 5 किलो दाल, 5 किलो चावल, 2 किलो तेल, 2 किलो शक्कर व 2 किलो नमक आदि साम्रगी थी। पूरी टीम ने चयनित परिवारों को राशन वितरण में सहयोग प्रदान किया।

वडोदरा में निःशुल्क दिव्यांग जांच चयन उपकरण वितरण शिविर

नारायण सेवा संस्थान द्वारा अजंता मेरीज हॉल सुभानपुरा वडोदरा में, शिविर सहयोगकर्ता श्रीमान् देवी जी भाई पटेल, श्री गजेन्द्र भाई साखर के सहयोग से दिव्यांगता जाँच, चयन एवं उपकरण वितरण शिविर आयोजित हुआ। जिसका उद्घाटन मुख्य अतिथि श्री महेन्द्र भाई चौधरी ने दीप प्रज्वलन कर किया।

संस्थान अध्यक्ष प्रशांत जी अग्रवाल ने बताया कि शिविर में आए 107 रोगियों की जांच व चिकित्सा डॉ.नेहा अग्निहोत्री ने की। शिविर में श्री लीला बहन बालचन्दानी, विशिष्ट अतिथि श्री देवेथ भाई आदि कई गणमान्य मेहमान उपस्थित थे।

शिविर प्रभारी हरिप्रसाद जी लड्ढा ने जनप्रतिनिधियों और अतिथियों का अभिनंदन किया। शिविर में 03 ऑपरेशन चयन, 28 कृत्रिम अंग नाप, 28 कैलिपर नाप, 15 वैशाखी भेंट की शिविर में जितेश जी व्यास, लोगर जी डांगी, मोहन जी मीणा, मुकेश जी त्रिपाठी ने भी सेवाएं दी।

आगे बढ़ने की दिशा में पहला कदम है आत्मविश्वास

जग भला तो आप भला

कुछ लोग दूसरों की बातों से प्रभावित होते हैं। लोगों ने उन्हें अच्छा कहा तो उन्हें लगता है कि वे सचमुच ऐसे हैं। वहीं यदि कुछ गलत कहा तो दिल पर ले लेते हैं। यह नजरिये की समस्या है। आपका नजरिया बचपन से होता है। छोटा बच्चा यदि बार–बार हर छोटी बात के लिए अभिभावक की अनुमति लेता है तो शायद उसकी यह आदत आगे भी बनी रह सकती है। लोगों की अनुमति या राय ऐसे लोगों के लिए अहम होती है। ऐसे लोग एक खास तरह का चश्मा धारण कर लेते हैं कि लोग उन्हें बुरा कह रहे हैं, उन्हें देखकर यह सोच रहे हैं, उन्हें यह कहेंगे आदि। ऐसा नहीं है कि उनका चश्मा नकारात्मक ही होता है। कुछ लोग इसके उलट होते हैं। उन्हें लगता है कि लोग मेरी तारीफ ही कर रहे हैं, मुझे पसंद करते हैं आदि।

यदि आप लोगों की तरफ देखकर यह सोचते हैं कि वे हमेशा आपके बारे में नकारात्मक या सकारात्मक ही बोलेंगे तो यह जरूरी नहीं। ऐसा वे लोग अधिक सोचते हैं, जिनमें आत्मविश्वास की कमी होती है। स्वावलंबी होने के बजाय परावलंबी होते हैं।

आत्मविश्वास खुद को आगे बढ़ाने की दिशा में पहला कदम

सबसे मुश्किल बात यह कि वे अपनी कमजोरियों को और बड़ा बनाकर देखते हैं। इससे उनकी खूबियां भीतर कहीं दब जाती हैं या बाहर नहीं आ पातीं। उन पर वे फोकस ही नहीं कर पाते। कोई दूसरा उनकी कमी क्या निकालेगा, वे खुद अपनी कमियां बता देते हैं। सोचें कि आप उक्त में से किस प्रकार के व्यक्तित्व हैं? यदि आप तीसरी श्रेणी में हैं तो आपको समझना होगा कि दुनिया वही देखेगी, जो आप खुद को देखेंगे या समझेंगे। खुद को आदर देंगे, इसे आगे बढ़ाने में लगातार प्रयासरत रहेंगे तो एक दिन दुनिया आपको सलाम जरूर करेगी। न भूलें कि आत्मविश्वास खुद को आगे बढ़ाने की दिशा में पहला कदम है।

कर्त्तव्य ही वास्तविक पूजा है

एक राजा ने दो माली रखे और उन्हें एक–एक बगीचा सौंप दिया। मंत्रियों ने उन्हें समझाया कि राजा को प्रसन्न रखना उनका परम कर्त्तव्य हैं एक माली ने बगीचे में राजा का चित्र स्थापित करके अधिकांश समय उसकी पूजा, वंदना, आरती में लगाना प्रारंभ कर दिया। दूसरे ने राजा की रुचि का ध्यान रखकर उसी के अनुसार सुंदर फल–फूल उगाने प्रारंभ कर दिया। राजा निरीक्षण के लिए पहुँचे तो पहले माली से उन्हें बहुत निराशा हुई और दूसरे को उन्होंने पारितोषिक देकर सम्मानित किया।

लालच का फल

दो दोस्त धन कमाने के लिए परदेस जा रहे थे। कुछ दूर चलने के बाद रास्ते में उन्होंने देखा कि एक बूढ़ा उनकी ओर भागा हुआ आ रहा है। उसने पास आकर कहा कि इस रास्ते मत जाओ यहां पर एक पिशाच रहता है। दोनों ने सोचा की बूढ़े ने किसी डरावनी चीज को देखा होगा। कुछ दूर चलने के बाद उन्होंने देखा कि रास्ते में एक थैली पड़ी हुई है।

खोलकर देखा तो उसमें सोने की मोहरें थी। दोनों ने सोचा कि अब तो काम बन गया। अब परदेस जाने की जरूरत नहीं है, चलो घर लौट चलें। इस पर पहले दोस्त ने कहा कि चलो अच्छा है पर बड़ी भूख लगी है तुम पड़ोस के गांव से खाना ले आओ फिर चलते हैं। दूसरा दोस्त भोजन के लिए चला गया। रास्ते में वह सोचने लगा कि अब तो मोहरे आधी–आधी हो जाएंगी। क्यों ना दोस्त को जहर देकर मार दें। .....और उसने लौटते समय खाने में विष मिला दिया।

इधर पहला दोस्त भी कुछ यही सोच रहा था। जैसे ही दूसरा दोस्त खाना लेकर आया उसने गला दबाकर उसकी हत्या कर दी। बाद में जब उसने वह विषयुक्त खाना खाया तो खुद भी मर गया। बुजुर्ग की बात सही साबित हुई, लालच के पिशाच ने दोनों को काल का ग्रास बना दिया।

मेरी अकड़

एक खेत में एक पुतला खड़ा था। एक दार्शनिक रोज उधर से गुजरता। उसका मन उससे बात करने को होता। एक दिन उसने पूछ ही लिया, तू अकेला अकड़ हुआ क्यों खड़ा है रहता है?' पुतले ने घूर कर देखा। दार्शनिक ने फिर पूछा, इस हाल में कभी घबराहट या बेचैनी नहीं होती। क्या मजा मिलता है तुम्हें? 'पुतला हंसने लगा। बोला 'तुम नहीं समझोगे। मुझे यहां खड़ा होकर सुकून मिलता है।' अकेले खड़े होने में सुकून' दार्शनिक ने हैरत से पूछा।' जी हां बहुत मजा आता है जब रात में लोग असली समझ कर डरते हैं। दिन में कोई पंछी और जानवर भी डर के मारे नही आता।'

दार्शनिक ने पूछा, 'पुतले, कभी तुम्हें अफसोस नहीं होता की तुम्हारे पास कोई सुख–दुख बांटने कभी नहीं आता।' पुतला बोला, 'मेरे मालिक ने मुझे इसी काम में लगा रखा है। पहले परेशानी होती थी, लेकिन अब आदत पड़ गई है। अब कोई डरता नहीं तो तकलीफ होती है।' दार्शनिक ने कहा, 'अपने मालिक की चिंता है क्या ऊपर वाले मालिक की कभी चिंता हुई? क्या कभी–कभी इबादत में झुकने की इच्छा नहीं होती?' पुतला रूंधे गले से बोला, 'अकड़ कर खड़ा होकर मैं सबकुछ भूल गया था। मुझे तो नकली जिंदगी में ही मजा आने लगा था।'

दिव्यांग, अनाथ, असहाय एवं वंचितजन की सेवा में सतत सक्रिय संस्थान के विभिन्न सेवा प्रकल्पों में करें सहयोग

कृपया अपने परिजनों या स्वयं के जन्मदिन, शादी की वर्षगांठ पुण्यतिथि को बनायें यादगार..

जन्मजात पोलियो ग्रस्त दिव्यांगों के ऑपरेशनार्थ सहयोग राशि

ऑपरेशन संख्या	सहयोग राशि	ऑपरेशन संख्या	सहयोग राशि
501 ऑपरेशन के लिए	17,00,000	40 ऑपरेशन के लिए	1,51,000
401 ऑपरेशन के लिए	14,01,000	13 ऑपरेशन के लिए	52,500
301 ऑपरेशन के लिए	10,51,000	5 ऑपरेशन के लिए	21,000
201 ऑपरेशन के लिए	07,11,000	3 ऑपरेशन के लिए	13,000
101 ऑपरेशन के लिए	03,61,000	1 ऑपरेशन के लिए	5000

निर्धन एवं दिव्यांगों को खिलाएं निवाला

आजीवन भोजन/नाश्ता सहयोग मिति (वर्ष में एक दिवस 50 दिव्यांग, निर्धन एवं अनाथ बच्चों के लिए भोजन/नाश्ता सहयोग हेतु मदद करें)	
नाश्ता एवं दोनों समय भोजन सहयोग राशि	37000/-
दोनों समय के भोजन की सहयोग राशि	30000/-
एक समय के भोजन की सहयोग राशि	15000/-
नाश्ता सहयोग राशि	7000/-

दुर्घटनाग्रस्त एवं जन्मजात दिव्यांगों को दें कृत्रिम हाथ-पैर और सहायक उपकरणों का उपहार

वस्तु	सहयोग राशि (एक नग)	सहयोग राशि (तीन नग)	सहयोग राशि (पाँच नग)	सहयोग राशि (ग्यारह नग)
तिपहिया साईकिल	5000	15,000	25,000	55,000
व्हील चेयर	4000	12,000	20,000	44,000
केलीपर	2000	6,000	10,000	22,000
वैशाखी	500	1,500	2,500	5,500
कृत्रिम हाथ/पैर	5100	15,300	25,500	56,100

गरीब दिव्यांगों को बनाएं आत्मनिर्भर

मोबाइल /कम्प्यूटर/सिलाई/मेहन्दी प्रशिक्षण सौजन्य राशि	
1 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 7,500	3 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -22,500
5 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 37,500	10 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -75,000
20 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 1,50,000	30 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -2,25,000

अधिक जानकारी के लिए कॉल करें

मो नं. : +91-294-6622222 वाट्सअप : +91-7023509999

आपके अपने संस्थान का पता

नारायण सेवा संस्थान - 'सेवाधाम', सेवानगर, हिरण मगरी, सेक्टर-4, उदयपुर-313002 (राजस्थान) भारत

NARAYAN SEVA SANSTHAN
Our Religion is Humanity
SINCE 1985

2021 महाकुम्भ हरिद्वार

कुम्भ में पधारें हुए सभी श्रद्धालुओं को करायें निःशुल्क भोजन

भोजन सहयोग राशि ₹3100

DONATE NOW

WAYS YOU CAN DONATE

Bank Name: State Bank of India
Account Name: Narayan Seva Sansthan
Account Number :31505501196
IFSC Code : SBIN0011406
Branch: Hiran Magri, Sector No.4, Udaipur-313001

paytm

UPI yono SBI SBI Payments

UPI Address for Indian donors which is narayanseva@SBI

+91 294 662 2222 | +91 7023509999

www.narayanseva.org | info@narayanseva.org

सम्पादकीय

सेवा–धर्म महान

कहा जाता है कि भगवान दीनों की, संकटग्रस्तों की, भंवरजाल में फंसे प्राणियों की सेवा करने, पीड़ा हरने, भूमि का भार कम करने अवतरित होते हैं। उनके वातावरण का कार्य "सर्व सुखाय होता है। दीनों के प्रति तो उनका उत्कट प्रेम होता है। यदि हम भक्त है, प्रभु में आस्था है तो हमारा भी दायित्व है कि हम भगवान के कार्य में यथाशक्ति, यथासंभव सहयोग करे। यों तो भगवान को सहयोग की क्या आवश्यकता है पर उनके एक अवतरण से दूसरे अवतरण के बीच के समय में उनके पसंद के कार्य सेवा को संपादित करें तो, भगवान का रीझना सुनिश्चित है। इसलिए कहा गया है कि भगवान का निजी कार्य करना भी उनकी आराधना ही है। इसीलिए तो सेवा को पूजा, सेवा को धर्म कहा गया है। यह सेवा धर्म महान है।

कुछ काव्यमय

सेवा पथ पर जो चले,
प्रभु हैं उनके साथ।
इसीलिए हे मानवी,
थाम दीन का हाथ।।
परमपिता करुणामयी,
वे हैं दीनदयाल।
न जिसका जग में कोई,
पूछे उसका हाल।।
यही अनुसरण मार्ग है,
ये ही सच्ची राह।
जग में नित बहता रहे,
सेवा अमिट प्रवाह।।
सेवा में जब डग बढ़े,
वंदन प्रभु का होय।
इतनी सरल उपासना,
काहे अवसर खोय।
जगत्पिता का अंश मैं,
हो वैसा ही काज।
वंचित की सेवा करूं,
सुखमय बने समाज।।

- वरदीचन्द राव, अतिथि सम्पादक

अपनों से अपनी बात

सब परिवर्तनशील है

अब यह सत्य क्या है, परिवर्तनशील संसार का सत्य ये है कि संसार में जो कुछ भी है, सब परिवर्तित होता रहता है। हमारी देह परिवर्तनशील है, शरीर में दो सौ छः हड्डियाँ हैं, पाँच हजार आठ सौ नौ मांसपेशियाँ हैं, जो हर पल, क्षण–क्षण परिवर्तनशील हैं। यही नहीं जल का स्वरूप भी परिवर्तनशील है। गंगा का जल भी पल–पल परिवर्तित होता है, जब हम इस परिवर्तनशील देह के साथ गंगा जी में डुबकी लगाते हैं, उस समय गंगा जी का जल कुछ और होता है और जब बाहर निकलते हैं, तब कुछ और होता है... ठीक इसी तरह मनुष्य की देह भी परिवर्तनशील है। ईश्वर ने मनुष्य के शरीर की रचना ही ऐसी की

है कि हमारा हृदय 72 बार धड़क जाता है, बार–बार पलकें झुक जाती हैं। एक पल में बीसों विचार आ जाते हैं, आपको अपनी धडकनों पर नियंत्रण रखना है, अपने विचारों पर नियंत्रण रखना है। जैसा सोचेंगे वैसा होगा। अगर आपका मस्तिष्क खुला हुआ है, तो वो संसार में समाये हर ज्ञान को ग्रहण कर सकता है। मस्तिष्क और आत्मा कभी बूढ़े नहीं होते, इसलिए विचार पवित्र होंगे तो आत्मा पवित्र होगी।

इन्सान जन्म लेता है और जीवन की सभी अवस्थाओं से गुजरता है, बचपन, युवावस्था, अधेड़ अवस्था और बुढ़ापा इन सभी सोपानों से गुजरता है। ऐसा नहीं कि कभी किसी पर बुढ़ापा नहीं आया हो। इसलिए हमें हर स्थिति परिस्थिति के लिए मानसिक रूप से तैयार रहना है। आज हम युवा हैं किन्तु जो वृद्ध हैं उनकी मजाक उड़ाने के स्थान पर उनकी सहायता करनी है, कभी ये नहीं भूलना है कि एक दिन हमें भी उम्र के उस दौर से गुजरना है।

– कैलाश 'मानव'

सिद्धांतो का नाम

महापुरुष अपने सिद्धान्तों को निज से ऊपर रखते हैं। वे सदैव अपने सिद्धान्तों पर अटल रहते हैं। वे कष्टमय जीवन स्वीकार कर लेते हैं, परंतु अनैतिक कार्य कभी नहीं करते। उनका सत्यता में विश्वास अडिग होता है। वे अपने विचारों पर दृढ़ प्रतिज्ञ होते हैं।

एक बार स्वामी विवेकानन्द को व्याख्यान हेतु विदेश से निमंत्रण प्राप्त हुआ। स्वामी विवेकानन्द ने विदेश जाने हेतु अपनी गुरु माँ से अनुमति लेना उचित समझा। स्वामी विवेकानन्द अनुमति लेने के लिए अपनी गुरु माँ शारदा के पास गए। उस समय माँ शारदा सब्जी काटने के लिए बैठी ही थीं कि स्वामी विवेकानन्द पहुँ गए। उन्होंने हाथ जोड़कर गुरु माँ से पूछा–माँ, क्या मैं विदेश में व्याख्यान देने जाऊँ?

गुरु माँ ने कहा–विदेश जाने या ना जाने के बारे में मैं तुमसे बाद में बात करूँगी, पहले मुझे सब्जी काटनी है और मुझे चाकू की जरूरत है, इसलिये तुम्हारे पास जो चाकू रखा है, वह मुझे दे दो।

स्वामी विवेकानन्द ने चाकू का नुकीला हिस्सा अपने हाथ में रखते हुए

गुरु माँ की तरफ हत्थे वाला हिस्सा रखते हुए गुरु माँ को चाकू दिया। गुरु माँ अत्यन्त प्रसन्न हो गई। उन्होंने स्वामी विवेकानन्द से कहा–मैं तुम्हें सहर्ष जाने की अनुमति देती हूँ। तुम्हारे जैसा व्यक्ति जीवन में कभी किसी को दुःख नहीं देगा। जो भी व्यक्ति तुम्हारे साथ रहेंगे, वे सदैव तुमसे प्रसन्न रहेंगे। उन्हें तुमसे किंचित् मात्र भी परेशानी नहीं होगी। तुम्हारा जन्म लोगों को खुशियाँ बाँटने के लिए हुआ है।

बात तब की है जब विवेकानन्द विद्यालय में पढ़ते थे। वे कक्षा में अक्सर अपने सहपाठियों को कहानियाँ सुनाते थे और सहपाठियों को भी उनकी कहानियाँ बहुत अच्छी व लुभावनी लगतीं थीं। अतः सहपाठी भी कहानियों को ध्यानपूर्वक सुनते थे। एक दिन जब अध्यापक कक्षा में नहीं थे और विवेकानन्द अपने साथियों को कहानियाँ सुना रहे थे, तो अचानक अध्यापक आ गए। सभी विद्यार्थी अपनी–अपनी जगह चुपचाप बैठ गए तथा अध्यापक ने पढ़ाना शुरू कर दिया। पढ़ाते–पढ़ाते अध्यापक को कुछ कानाफूसी सुनाई दी। अध्यापक ने जो प्रकरण वे पढ़ा रहे थे, उससे सम्बन्धित प्रश्न सभी विद्यार्थियों से पूछने लगे। परन्तु स्वामी विवेकानन्द के सिवाय कोई भी अन्य विद्यार्थी उनके प्रश्नों का उत्तर नहीं दे पाया। इस पर अध्यापक ने स्वामी विवेकानन्द के अलावा सभी विद्यार्थियों को अपनी–अपनी बैंच पर खड़े हो जाने के लिए कहा। सभी विद्यार्थियों के साथ स्वामी विवेकानन्द भी अपनी बैंच पर खड़े हो गए। यह देखकर अध्यापक ने स्वामी विवेकानन्द से बैंच पर बैठने को कहा कि तुम नीचे बैठ जाओ, क्योंकि तुमने तो प्रश्नों के उत्तर दे दिए थे। इनमें से किसी ने भी प्रश्नों के उत्तर नहीं दिए, ये सब बातें कर रहे थे, तुम नहीं। अतः तुम्हें कोई सजा नहीं मिलेगी। अध्यापक की बात सुनकर बालक विवेकानन्द ने अत्यन्त विनम्रतापूर्वक हाथ जोड़कर अध्यापक से कहा–गुरुदेव ! बातें ये नहीं कर रहे थे, अपितु मैं ही बोल–बोलकर इन्हें कहानी सुना रहा था। अतः आपका अपराधी और दंड का पात्र मैं हूँ। आप मुझे ही दंड दीजिए तथा इन सभी को छोड़ दीजिए। हमें भी थोड़े से लालच के लिए जीवन के आदर्शों को नहीं त्यागना चाहिए। आज वर्तमान समय में जब मानव, मानव का गला काटने में लगा है, ऐसे में हमें उन महापुरुषों से सीख लेनी होगी, और उनके कदमों पर चलना होगा जिन्होंने अपने सिद्धान्तों हेतु अपना सर्वस्व न्यौछावर कर दिया था।

–सेवक प्रशान्त भैया

एक सेवाभावी मानव की जीवनी

(वरिष्ठ पत्रकार श्री सुरेश जी गोयल द्वारा लिखित–झीनी–झीनी रोशनी से)

कैलाश इसके दर्शन करते ही सम्मोहित हो गया और मंत्र मुग्ध हो टकटकी लगाये इसकी तरफ देखता ही रहा, जब सुध आई तो नतमस्तक हो इसे प्रणाम किया। पर्वत पर तो कोई जा नहीं सकता, यात्रीगण यहीं हवन– पूजन– पाठ आदि करते हैं। यह एक त्रिशूलाकार हिमनद अर्थात् ग्लेशियर था। पर्वत में जगह जगह खोहें बनी हुई थी, ये प्राकृतिक खड्डे थे, श्रद्धालु इन खोहों को ही पूजा अर्चना के लिये उपयोग में लेते थे। यात्रियों ने अलग अलग खोहें अपने लिये चुन ली। कई लोग अपने साथ घी तथा अन्य हवन – सामग्री लेकर आये थे, उन्होंने यज्ञ शुरू कर दिये। कैलाश को इस बात का भान ही नहीं था इसलिये वह अपने साथ कुछ भी नहीं लाया मगर अन्य यात्रियों द्वारा कराये जा रहे यज्ञों में अपनी आहुति देने से नहीं चूका।

कैलाश, मानसरोवर की यात्रा सकुशल करने के बाद उदयपुर लौट गया। कुछ ही दिनों बाद गंगोत्री–यमुनोत्री की यात्रा करने का मन हुआ। टी.वी. पर कार्यक्रम का प्रसारण निरन्तर चल रहा था। कैलाश, मानसरोवर पर तो छोटा केमरा ले गया था मगर गंगोत्री– यमुनोत्री हेतु निकले तो पूरी केमरा टीम भी साथ ले ली। संस्थान की एम्बुलेन्स और जीप लेकर त्रिषिकेष पहुंच गये। टी. वी. पर निरन्तर आते रहने के कारण कई लोग कैलाश को पहचानने लगे थे। जगह जगह लोग उसको नाम पुकार कर अभिवादन करते तो वह चौंक जाता कि यह व्यक्ति मुझे कैसे जानता है, फिर उससे पूछता तो पता चलता कि टी. वी. पर कार्यक्रम देखता है।

अंश-215

तरबूज खाने के फायदे

- तरबूज में लाइकोपिन पाया जाता है, जो त्वचा की चमक को बरकरार रखने में मदद करता है।
- यह कोलस्ट्रॉल के स्तर को नियंत्रित कर के दिल संबंधी बीमारियों की रोकथाम में भी मदद करता है।
- इसमें विटामिन की प्रचुर मात्रा पाई जाती है जो शरीर के इम्यून सिस्टम को दुरुस्त रखती है।
- इसकी ठंडी तासीर दिमाग को शांत रखती है।
- तरबूज के बीज पीस कर चेहरे पर लगाने से निखार आता है। इसका लेप सिर दर्द में आराम देता है।
- तरबूज के नियमित सेवन से कब्ज दूर होता है।
- खून की कमी होने पर इसका जूस पीना फायदेमंद होता है।
- तरबूज को चेहरे पर रगड़ने से निखार आता चेहरे पर मौजूद ब्लैकहेड्स भी हट जाते है।
- तरबूज शरीर को हाइड्रेट रखने का काम करता है क्योंकि इसमें पानी की अधिकता होती है।

जरुरतमंदों की सेवा

एक हकीम गुरु गोविन्द सिंह के दर्शन करने आनन्दपुर गया। जब वह उनसे मिलकर वापस लौटने लगा तो गुरुजी ने आशीष देते हुए कहा– जाओ तुम दीन दुखियों की सेवा करो।

हकीम अपने घर लौट आया। हकीम इबादत में तल्लीन था कि गुरु गोविन्द सिंह उसके घर आ पहुँचे। वह उनकी खातिर में तैयार होता, इससे पहले घर के बाहर किसी ने आवाज लगाई –हकीम साहब ! मेरे पड़ोसी की तबीयत बहुत खराब है। उसे बचा लीजिए। यह सुनकरहकीम थोड़ा असमंजस में पड़ा कि बीमार की सेवा की जाए या गुरु का सत्कार। उसने बीमार का इलाज करना उचित समझा। इलाज के पश्चात् हकीम जब घर आया तो गुरुजी घर पर बैठे मिले। वह गुरु जी से क्षमा मांगने लगा। गुरु जी ने गले लगाकर कहा मैं तुम्हारे सेवाभाव से बहुत खुश हुआ।

अनुभव अमृतम्

द्रष्टाभाव की कहाँ दृष्टि थी? द्रष्टाभाव से कहाँ देखा? वो तुरन्त प्रतिक्रिया ही करते रह गये। ये ऐसा हुआ, ये ऐसा नहीं होना चाहिए, ये ऐसा क्यों कर दिया? मुझे क्यों बोल दिया? रात को नींद खुल गई तो वो याद आने लगी। दो–तीन दिन मन में आया। क्या पा लिया? क्या प्राप्त किया? कोलाहल, दिमाग को खराब कर दिया– हमने। चिंताओं में, फिकर में उसने ऐसा क्यों कहा? उसको ऐसा नहीं कहना चाहिए, उसने मेरी हंसी क्यों उड़ायी? क्यों भाई क्या हो गया? क्या बिगड़ गया? वीरनगर से वापस सिरोही राजकोट होते हुए आ गये। पर एक दिव्य जो सम्बन्ध बन गया राजमल जी भाईसाहब का मैं कभी–कभी सोचता हूँ। एक जगह पढ़ा था। एक कोई महापुरुष है रेलवे में सर्विस करते थे अचानक उनको तार आया कि आपकी पोस्टिंग कुछ महीनों के लिए उस पहाड़ी खण्ड में की जाती है। तार आया था, जोइन करना ही था। उस पहाड़ी खण्ड में चले गये। भारत का दूरस्थ रेलवे स्टेशन घूमने का शौक था। घूमते–घूमते निकले। तो आगे एक बच्चा नजर आया। आइये मेरे साथ चलिये, अंगुली पकड़कर चलिये। एक बहुत बड़े महापुरुष ने जिनकी उम्र 500 साल 600 साल। बेटा मैं तुझे ढूंढ रहा था तुझे याद आया कि नहीं आया? पिछली बार मैं तेरा गुरु था। मैंने तुझे यहाँ बुलाया है। तुझे दुनिया को अच्छा बाँटना हैं। अच्छा करना है, दिव्य संदेश देना है। नीचे आये दो –चार दिन बाद टेलिग्राम आ गया कि गलती से आपका ट्रॉन्सफर कर दिया गया था। अब वापस अपनी पुरानी जगह पर जोईन हो जाइये। ये पढ़ा था, तब मैंने अनुभव किया।

सेवा ईश्वरीय उपहार– 95 (कैलाश 'मानव')

NARAYAN SEVA SANSTHAN
Our Religion is Humanity
| 2021 महाकुम्भ हरिद्वार

करवाए 7 दिवस संत भोजन

5 ऑपरेशन का का करें सहयोग

5 कृत्रिम अंगों का करें सहयोग

सहयोग राशि ₹51000

Bank Name: State Bank of India
Account Name: Narayan Seva Sansthan
Account Number :31505501196
IFSC Code : SBIN0011406
Branch: Hiran Magri, Sector No.4, Udaipur-313001

Paytm | UPI yono SBI | SBI Payments
UPI Address for Indian donors which is narayanseva@SBI

+91 294 662 2222 | +91 7023509999
www.narayanseva.org | info@narayanseva.org

अपने बैंक खाते से संस्थान के बैंक खाते में जमा करें - अपना दान

आप अपना दान सहयोग नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर के नाम से संस्थान के बैंक खातों में सीधे भी जमा करवाकर PAY IN SLIP भेजकर सूचित कर सकते हैं, जिससे दान प्राप्ति रसीद आपको भेजी जा सके।

संस्थान पेन कार्ड नम्बर AAATN4183F, टेन नम्बर JDHN01027F

Bank Name	Branch Address	RTGS/NEFT Code	Account
State Bank of India	H.M.Sector-4	SBIN0011406	31505501196
ICICI Bank	Madhuban	ICIC0000045	004501000829
Punjab National Bank	KalajiGoraji	PUNB0297300	2973000100029801
Union Bank of India	Udaipur Main	UBIN0531014	310102050000148

संस्थान को दिया गया दान-सहयोग आयकर अधिनियम 1961 की धारा 80G के अन्तर्गत 50 प्रतिशत नियमानुसार छूट के योग्य है।

'मन के जीते जीत सदा' दैनिक समाचार-पत्र अब ऑनलाईन साईट पर भी उपलब्ध है
www.narayanseva.org, www.mannkijeet.com
: kailashmanav

मन के जीते जीत सदा (दैनिक समाचार-पत्र) प्रकाशक : कैलाश चन्द्र अग्रवाल स्वामित्व : नारायण सेवा संस्थान प्रकाशन स्थल : सेवाधाम, सेवानगर, हिरण मगरी, से. 4, उदयपुर (राज.) 313002
मुद्रक : न्यूट्रेक ऑफसेट प्रिंटर्स, 13, भोपा मगरी, बी.एस.एन.एल. एक्सचेंज के पास, हिरण मगरी, सेक्टर - 3 उदयपुर (राज.) के लिए नारायण प्रिंटिंग प्रेस, सेवा महातीर्थ, लियो का गुडा, उदयपुर
• सम्पादक : लक्ष्मीलाल गाडरी, मो. 8278607811, 9119398965 • ई-मेल : mankijeet2015@gmail.com • आरएनआई नं. RAJHIN/2014/59353 • डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023